THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

नींबूपानी और प्रेम
Lemonade and love

Author – Debbie Peck

Christian Science Sentinel Volume 116, Issue 20, May 19, 2014

कोई आध्यात्मिक प्रगति का मूल्यांकन कैसे करता है?

कुछ समय से मैं इसके लिए प्रार्थना कर रही थी। हैरानी की बात थी, मैंने अपना जवाब फ्रिज में पाया।

मेरी एक मित्र! कुछ सप्ताह के लिए कुछ फाइलों को क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित करने में मेरी मदद करने के लिए मेरे घर आई थी। उसने पहुँचने से पहले, मैंने अपने फ्रिज को विभिन्न प्रकार के शीतल पेय से भर दिया, जिनमें अगूँर, अनार, संतरा और मेरा सबसे प्रिय नींबू पानी था।

आप मेरी निराशा की कल्पना कर सकते हो जब, पहले सप्ताह के अन्त में, दूसरे स्वादिष्ट पेय को छुआ तक नहीं गया था, और नींबू पानी की मात्रा गम्भीरता से कम होती जा रही थी।

इसलिए, मैंने वही किया जो मुझे स्वाभाविक लगा। दुबारा फ्रिज को भरने की, जबकि वहां पहले से ही बहुत सारे पेय थे–या अपनी पसन्दीदा से वचिंत होने की–इच्छा न रखते हुए–मैंने नींबू पानी की आखिरी बोतल को उठाया और सबसे नीचे वाली शेल्फ पर छुपा दिया।

यह हमें वापिस शुरूआत की ओर ले जाता है–आध्यात्मिक विकास के लिए उन प्रार्थनाओं की तरफ। मैं मेरी बेकर एडी द्वारा साँयस एण्ड हैल्थ विद् की टू द स्किप्चर्स के पहले अध्याय (शीर्षक प्रार्थना) को मेरी प्रार्थनाओं के लिए मार्ग दर्शक पुस्तक के रूप में प्रयोग करना पसन्द करती हूँ। मिसिज एडी अपने पाठकों से आध्यात्मिक विकास करने के लिए प्रार्थना करने का आग्रह करती हैं। ''हमें सबसे अधिक जरूरत है'' वह लिखती हैं, ''उत्साही इच्छा की प्रार्थना की, सद्भावना में विकास के लिए, धैर्य, विनम्रता, प्रेम तथा अच्छे कार्यों में अभिव्यक्त होते हुए'' (पृष्ठ 4)। मैं इस तरह के विकास के लिए प्रार्थना कर रही थी, परन्तु मुझे पता नहीं था कि ईमानदारी से और निरन्तर प्रार्थना करने के अलावा मैं इसे बढ़ाने के लिए इसके अतिरिक्त और क्या कर सकती थी।

मिसिज एडी कुछ पृष्ठों के बाद लिखती हैं: ''सारी प्रार्थना की कसौटी इन प्रश्नों के उत्तर में निहित हैं, क्या हम इस माँग के कारण अपने पड़ोसी से ज्यादा प्रेम करते हैं। क्या हम आज भी पुराने स्वार्थ में हैं, कुछ बेहतर के लिए प्रार्थना करके संतुष्ट होते हुए, चाहे हम अपनी प्रार्थना के साथ निरन्तर जी कर अपने निवेदनों की निष्ठा का कोई प्रमाण नहीं देते। यदि स्वार्थ ने दयालुता को जगह दे दी है? हम अपने पड़ोसी के साथ निस्वार्थपूर्ण व्यवहार करेंगे, और उनको आशीषित करेंगे जो हमारी निन्दा करते हैं; परन्तु यह कहने मात्र से, कि यह हो जाए, हम इस महान कर्त्तव्य को पूरा नहीं कर पाऐंगे'' (पृष्ठ 9)।

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2014 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

प्रतिदिन हमारे पास आध्यात्मिक प्रगति करने के अवसर होते है जिन्हें हमें नही छोड़ना चाहिए।

सबसे पहले, नींबू पानी को नीचे के शेल्फ में छुपाना मुझे अहानिकारक लगा। फ्रिज में और बहुत सारे स्वादिष्ट पेय थे जिनका मेरी मित्र आनन्द ले सकती थी। फिर भी मैं पेय प्रदान करने वाली एक विचारशील प्रेम करने वाली मेज़बान थी। परन्तु तभी, जब मैं मिसिज एडी की प्रार्थना की कसौटी पर विचार कर रही थी, मैं अपने आप से पूछने पर मजबूर हुई क्या आध्यात्मिक विकास के लिए मेरी पुकार वास्तव में मेरी मित्र के प्रति मेरी प्रेम की अभिव्यक्ति के अनुकूल थी। प्रार्थना में परमेश्वर के सामने झुकते हुए और सद्भावना में विकास की मांग करते हुए, क्या मैं वास्तव में नींबू पानी को छुपाकर अपने पड़ोसी से प्रेम कर रही थी?

मैं अचानक से एक प्रकार के आध्यात्मिक चौराहे पर थी। एक रास्ता: आध्यात्मिक विकास। दूसरा: मैत्रीपूर्ण व्यवहार से कम। एक निर्णायक फैसला, लेकिन वास्तव में मुश्किल नहीं, मुझे एहसास हुआ जैसे ही मैंने बाइबल की शिक्षाओं के बारे में सोचा जो मुझे अति प्रिय थी। मुझे क्राइस्ट जीसस का एक वकील को दिया गया उत्तर याद आया जब उसने पूछा सबसे प्रमुख आज्ञा क्या थी: "तुम दाता अपने परमेश्वर से अपने सम्पूर्ण हृदय के साथ और अपनी सम्पूर्ण अन्तश्चेतना के साथ और अपने सम्पूर्ण मन के साथ प्रेम करोगे..... और दूसरी इस तरह है तुम अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करोगे" (मत्ती 22: 37, 39)।

जितनी मूर्खतापूर्ण नींबू पानी की घटना पहले नज़रिये में दिखाई दी, मैंने एकदम से महसूस किया कि इसने मेरी प्रार्थनाओं को व्यवहार में लाने के बारे में मुझसे सीधा और स्पष्ट प्रश्न किया था। अचानक से नींबू पानी को छुपाना मुझे नीच प्रतीत हुआ, और अपनी उस मित्र के प्रति प्रेम का अभाव जो मेरी मदद करने के लिए इतना कुछ कर रही थी। मैंने अपने फ्रिज में पेय को व्यवस्थित किया और सुनिश्चित किया कि मेरी मित्र आखिरी नींबू पानी का आनन्द ले।

इस अनुभव के द्वारा मैंने स्वयं को ऊपर एक छोटी लड़ाई जीत ली थी, तथा बेमन से उदारता में छुपे हुए स्वार्थ के धूर्त सुझावों को पहचानने तथा हराने में जीत हासिल की। ऐसे निर्णय लेना जहां मूलभूत उद्देश्य स्वार्थ, बेईमानी, क्रोध या हठ पर आधारित हो, आध्यात्मिक विकास को नहीं बढ़ाता, न ही परमेश्वर के प्रेम के कानून के अनुरूप होते है। कई बार, हम वास्तव में बिना सोचे कि हम क्या कर रहे हैं फैसले ले लेते हैं। आध्यात्मिक प्रगति तब आती है जब हम अपने कार्यों के बारे में परमेश्वर के कानूनों के संदर्भ में सोचते हैं, और अपनी सर्वोच्च समझ के अनुसार कार्य करते हैं कि क्या सही और प्रेममयी है। सुधार जो हम करते हैं, और जीत जो हमें मिलती है, जोशिले या अशुद्ध विचारों के ऊपर, या क्रियाओं पर हमारी वास्तविक आध्यात्मिक प्रगति को प्रकट करते हैं।

पुराने नियम में अनेक पद्यांश है, जिनमें प्रेम के पवित्र कानून के महत्व पर जोर दिया है–विशेष रूप से परमेश्वर को सर्वोच्च प्रेम करना, तथा साथ ही अपने पड़ोसी को भी। मैं हमेशा से प्रभावित होती हूँ कि पुराने इब्रानियों ने इस प्रेम को विदेशियों तक जो उनके बीच रहते थे तथा अजनबियों तक फैलाया।

नये नियम में, अच्छे पड़ोसी के सबसे उपयोगी उदाहरणों में से एक जीसस का अच्छे सामरी का दृष्टान्त है (देखें लूका 10:29–31), और उनकी घोषणाओं में कि हम अपने शत्रुओं को भी प्रेम तथा आशीषित करते हैं (देखें: मत्ती 5:44), जीसस ने सुव्यवस्थित तरीके से सभी मानवीय रिश्तों को परमेश्वर के प्रेम के लेंस द्वारा परिभाषित किया। हम ऐसे किसी रिश्ते की कल्पना नहीं कर सकते–चाहे यह दास या स्वामी का, मित्र या शत्रु का, परिवार या अजनबी का, नागरिक या विदेशी का हो–जो प्रेम की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति का पात्र न हो।

Translation © 2014 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

जैसा कि मैं देखती हूँ बहुत सारे लोग खुले आम लालयित होते हैं और शान्ति से प्रार्थना करते हैं, और अधिक प्रेम करने के लिए। सद्भावना में विकास के लिए प्रार्थना उनकी सहायता करती है बुद्धिमता से चयन करने में जब वे एक चौराहे पर आते है, जहाँ दूसरों के लिए उनके प्रेम को परखा जाता है। प्रतिदिन हमारे पास आध्यात्मिक प्रगति करने के लिए अवसर होते हैं जिन्हें हमें छोड़ना नहीं चाहिए। हम उन अवसरों को हमारी प्रार्थनाओं के जवाब के रूप में देख सकते हैं। हमारे ''नींबू पानी के अनुभव'' हमें परिवर्तित कर सकते हैं अगर हम जो प्रार्थना करते हैं उसको अभ्यास में लाएं, तथा दूसरों को प्रेम करें जिस प्रेम के वे पात्र हैं।

Translation © 2014 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.